# रांची विश्वविद्यालय, रांची में 5 जुलाई 2016 को आयोजित दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. रांची विश्वविद्यालय के 30वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर यहां आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय एवं विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर होता है क्योंकि इस दिन छात्र अपने हाथों में डिग्री, मन में आशा और नई उम्मीदों के साथ नए जीवन में पदार्पण करते हैं। मैं आज उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देती हूं। इसके साथ मैं यह भी कहती हूं कि आपके जीवन में एक नया अध्याय प्रारंभ हो रहा है। मुझे विश्वास है आप जब इस प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान के परिसर से बाहर जायेंगे, तो यहां प्राप्त ज्ञान एवं अनुभव आपको नई चुनौतियों का सामना करने में काफी काम आयेगा।

2. **''अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाज्जनशालकया ।**
**चक्षुरून्मीलिंत येन तस्मै श्री गुरूवे नमः।।''**

इसका अर्थ है, ''उन गुरूओं को प्रणाम जो हमारी आंखों से अज्ञानता के अन्धेरे को हटाकर ज्ञान का प्रकाश देते हैं।'' रांची विश्वविद्यालय का **आदर्श वाक्य ''तेजस्वि नावधीतमस्तु''** इसी भाव को प्रतिध्वनित करता है।

3. शिक्षा प्राप्ति के केन्द्र के रूप में विश्वविद्यालय का अपना विशेष महत्व है। विश्वविद्यालय हमारे युवाओं को परिपक्व बनाने, विविध विषयों का ज्ञान देने और इसके फलस्वरूप राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अपने दायित्वों के प्रति उन्हें सजग बनाने की दिशा में काम करता है। कॉलेज में उच्च शिक्षा की प्राप्ति के दौरान हमारा सम्पर्क विभिन्न विचारधाराओं के छात्रों से होता है जो भिन्न भिन्न मत, विचार एवं दृष्टि होते हुए भी एक साथ ज्ञानार्जन करते हैं। इसी क्रम में दूसरे के विचारों का आदर करना सीखते है।

4. किसी भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र की उन्नति में शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है इसलिए इसकी विषयवस्तु एवं गुणवत्ता का श्रेष्ठ होना आवश्यक है। मैं समझती हूं कि शिक्षा का अर्थ केवल तथ्यों और आंकड़ों की जानकारी प्राप्त करना या परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होना ही नहीं है, विद्यार्थियों को भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने हेतु उनका बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक विकास भी आवश्यक है और इस संबंध में शिक्षा संस्थान और अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने और सृजनात्मक वातावरण

में अन्वेषण (investigation) की भावना एवं मौलिक सोच विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। **One great scientist has said that "I have no special skills. I am only passionately curious."**

5. देखने में आया है कि हमारे देश में Social Sciences की शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता है जितना Professional degrees की शिक्षा को। अधिकांश अभिभावकों की प्राथमिकता यह होती है कि किसी प्रकार भी अपने पुत्रों/पुत्रियों को डॉक्टर अथवा इंजीनियर बनाएं, एमबीए की शिक्षा दें। यह स्वाभाविक भी है। जबकि किसी भी देश के सम्यक् विकास (holistic development) के लिए समाज में हर विषयों का व्यावहारिक ज्ञान एवं जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। वास्तव में applied science और technology का विकास pure science के अध्ययन पर ही आधारित है। जैसे–जैसे समाज का विकास हो रहा है, सामाजिक विज्ञान की कई नई शाखाएं विकसित हो रही हैं और उनकी प्रासंगिकता निरंतर बढ़ रही है। उदाहरण के लिए, वृद्धावस्था से संबंधित विज्ञान (Gerrontology), मानव व्यवहार विज्ञान, सोशल मीडिया के प्रभाव से संबंधित अध्ययन जैसी नई शाखाएं विकसित हो रही हैं।

6. सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु Innovation है। Innovation is change that unlocks new values. In fact, it distinguishes between a leader and follower. Innovative ideas शिक्षा पद्धति की दशा और दिशा बदल सकते हैं। प्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटीन ने कहा थाः– **"Imagination is more important than knowledge. Knowledge is limited. Imagination encircles the world".**

**7.** आज युवाओं के समक्ष सबसे बड़ी समस्या रोजगार की है। चूंकि यह एक knowledge based economy है जिसमें विशेष ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को अधिक महत्व मिलता है। इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने **स्किल इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया और स्टैंड अप इंडिया तथा Digital India** कार्यक्रम की शुरूआत की है जिनके माध्यम से सरकार skill development, रोज़गार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देना चाहती हैं और युवाओं को आगे आकर इन कार्यक्रमों का फायदा उठाना चाहिए। भारत में सॉफ्टवेयर के पेशे वाले लोगों

को मिली सफलताएं इसका उदाहरण हैं। आज वे भारत में नहीं, पूरे विश्व में अपने हुनर के बल पर राज कर रहे हैं। अमेरिका में भी सॉफ्टवेयर के व्यवसाय में 30 प्रतिशत से अधिक भारतीय लगे हैं।

**8.** हम डिजिटल प्रौद्योगिकी के युग में जी रहे हैं। आज पूरा विश्व एक ग्लोबल मार्केट में बदल गया है। हमें इस बदलाव को आत्मसात करना सीखना होगा। इस बदलाव में भी कुछ विशेष हुनर विकसित किए जाने की आवश्यकता है, तभी आप इस प्रतिस्पर्धा भरे विश्व में अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकते हैं। Today's world is technology driven world and technology is developing and changing very rapidly to make permanent changes in our lives, our social behaviour, closure of several traditional businesses, yet creation of totally new and innovative business opportunities. तेजी से बदलते इस दौर में क्या हमारा युवा वर्ग अपने–आपको इस बदलाव के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए तैयार है? जो समय के साथ नहीं बदलता है, समय उसे बदल देता है। उदाहरण के लिए Kodak Company का फोटोग्राफिक फिल्म्स एवं पेपर में एकच्छत्र साम्राज्य था। लेकिन नई technology जिससे हर मोबाइल फोन में कैमरा उपलब्ध है, फोटोशॉप जैसे software ने Kodak Company के फोटोग्राफिक फिल्म्स और पेपर के व्यवसाय को खत्म–सा कर दिया है। आज दुनिया की सबसे बड़ी टैक्सी प्रोवाइडर "Uber Company" है जिसकी अपनी एक भी कार नहीं है। ऐसा कहा जाता है कि दुनिया में सबसे ज्यादा होटलों की बुकिंग ''Airbnb'' नामक कम्पनी की वेबसाइट से होती है जिसकी अपनी कोई परिसंपत्ति नहीं है। यह सब तेजी से बढ़ती हुई technology का कमाल है। माना जाता है कि technology के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण अगले 30 वर्षों में दुनिया से लगभग एक–तिहाई नौकरियां खत्म हो जाने की आशंका है क्योंकि खनन एवं कृषि क्षेत्र में Robots काम करने लगेंगे और संभवतः सभी कारें driverless हो जाएंगी। लेकिन technology सिर्फ नौकरियां ही नहीं छीन रही हैं, नई नौकरियों का सृजन एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में हो रहा है। जैसे ई–कॉमर्स बढ़ने से इंटरनेट, दूरसंचार, कोरियर सर्विस, कम्प्यूटर एवं साइबर वर्ल्ड से संबंधित रोजगार का सृजन हो रहा है। ई–कॉमर्स से परंपरागत व्यापार को जबरदस्त चुनौतियां मिल रही हैं, परंतु उपभोक्ताओं को एक विकल्प मिल रहा है। जहां एक के लिए वह चुनौती हैं वहीं दूसरे के लिए एक नया

अवसर। ये सारी बातें हमें बताती हैं कि हमें आगे आने वाली चुनौतियों के लिए और उसके लिए जरूरी योग्यता एवं special skills विकसित करने की तरफ ध्यान देना चाहिए और अपने पाठ्यक्रम, विषय–वस्तु में आवश्यक बदलाव लाने चाहिए। इस संबंध में एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि विश्वविद्यालयों द्वारा तैयार पाठ्यक्रम समाज पर प्रभाव डालने के साथ–साथ समाज से प्रभावित भी होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया में प्रभाव डालने और प्रभावित होने के लिए समाज के साथ संपर्क का एक तरीका होना चाहिए। हम अक्सर बदलाव के पीछे होते हैं। होना यह चाहिए कि वक्त बदलते ही हमें समय की आहट को समझ लेना चाहिए।

9. हमारे देश में सरकार द्वारा एक नई शिक्षा नीति लाई जा रही है। इसका मसौदा अभी तैयार किया जा रहा है और सभी संबंधित पक्षों से चर्चा एवं गहन विचार विमर्श के पश्चात् इसको अंतिम रूप दिया जाएगा। लेकिन, इसके कुछ मूलभूत सिद्धांत हैं जिन पर यह आधारित होंगी, जैसे नैतिक शिक्षा, हुनर अर्जित करना (skill development), शिक्षा की गुणवत्ता (quality) और सभी के लिए सस्ती एवं सुलभ शिक्षा की व्यवस्था (affordability) करना इत्यादि। इस नीति में सरकार एवं उद्योग जगत में भागीदारी की भी महत्व दिया जा रहा है।

**10.** बढ़ते हुए ज्ञान पर आधारित इस विश्व में प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों को अपनी उत्कृष्टता के स्तर को बढ़ाना होगा। हम अपने विश्वविद्यालयों की उत्कृष्ता को इतना बढ़ाना चाहिए कि ये विश्व के सर्वोच्च विश्वविद्यालयों में उनका नाम शुमार हो। देश का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए हमारे पास युवा शक्ति हैं। मैं देश की युवा शक्ति का आह्वान करते हुए स्वामी विवेकानन्द की बात दोहराती हूं:–"Arise, awake and stop not till the goal is reached."

**11.** शोध के महत्व को पहचान कर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षकों के साथ–साथ छात्रों को भी अनुसंधान कार्यों पर काम करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। शोध के संदर्भ में, हमें दो मुख्य पहलुओं वित्त पोषण और शोध की गुणवत्ता में सुधार लाना होगा। यदि शोध की गुणवत्ता अच्छी और समाज के लिए उपयोगी होगी तो वित्त पोषण उपलब्ध कराने वाले संगठन सामने आएंगे। जरूरी बुनियादी ढांचे, मार्गदर्शन, कौशल निर्माण, वित्त पोषण आदि की

व्यवस्था के लिए औद्योगिक घरानों को इसमें शामिल किया जा सकता है। इससे विश्वविद्यालय राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थियों को समाज के लिए उपयोगी विषयों पर शोध करने और समाज के लिए विचारक बनने हेतु प्रोत्साहित कर पाएंगे।

12. ग्रामीण विकास के संदर्भ में, शोध और उच्च शिक्षा दोनों, अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन क्षेत्रों में अवसर की कमियां हैं। यह सबसे महत्वपूर्ण कारक है जिसके कारण गांवों से बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन हो रहा है। यदि हम गांवों में जीवन–यापन की स्थितियों एवं जीवन–स्तर की गुणवत्ता में सुधार कर पाएं, तो हम इस रूझान को कम कर सकते हैं जिससे बढ़ती आवश्यकताओं के बीच शहरी अवसंरचना पर डाले जाने वाले बोझ को कम किया जा सकता है। यदि हमारे विद्यार्थियों को इन कार्यकलापों के विषय में जानकारियां होंगी, तो इस संबंध में न केवल उसका हल निकाल सकते हैं बल्कि आस–पास के समाज से बेहतर संवाद स्थापित कर पाने में समर्थ होंगे। इससे उनके समक्ष वास्तविक जीवन से जुड़ी हुई समस्याओं के समाधान की दिशा में व्यावहारिक समझ विकसित होती है।

13. मित्रो, किसी भी देश की जनसंख्या का सबसे सक्रिय भाग वहां के युवा होते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश में 27 प्रतिशत से भी अधिक लोग 15-29 वर्ष के युवा हैं। आने वाले वर्षों में जहाँ विकसित देशों को कार्यबल में बड़ी उम्र वाले लोगों की संख्या अधिक होने की चुनौती का सामना करना पड़ेगा, वहीं भारत में जनसांख्यिकीय स्थिति बहुत अनुकूल होगी। निस्संदेह, यह जनसांख्यिकीय लाभांश हमारे लिए एक बड़ा मौका है जिसका इस्तेमाल हम अपने देश के सर्वांगीण और समावेशी विकास के लिए कर सकते हैं।

14. आंकड़ों को देखें, तो भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले युवाओं की संख्या कई विकसित देशों की तुलना में काफी कम है। इस समय 18 प्रतिशत से कम ही युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जो एक ऐसे देश के लिए काफी कम है, जहाँ युवा जनसंख्या काफी अधिक है। इसमें और वृद्धि पर बल दिए जाने की आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा ऐसा प्रकाश है जो गरीबी और अज्ञानता के अंधेरे को दूर करता है।

**15.** हमें अपने अनेक प्राचीन विश्वविद्यालयों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा एवं परम्पराओं पर गर्व है जिनमें से कुछ नालंदा, तक्षशिला, उज्जैन, विक्रमशिला, ओदंतपुरी और वल्लभी हैं। उस समय प्रत्येक विश्वविद्यालय को अध्ययन के एक विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त थी।

तक्षशिला को चिकित्सा के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त थी, उज्जैन ने खगोलशास्त्र पर बल दिया, जबकि अन्य विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म एवं दर्शन के अध्ययन केंद्र थे। ये विश्वविद्यालय अपने विद्वानों और विश्व को दिए गए उनके योगदान के लिए जाने जाते थे।

**16.** रांची विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के समय से ही विशेषकर जनजातीय इलाके में उच्च शिक्षा के प्रसार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं कामना करती हूँ कि यह विश्वविद्यालय समाज के विभिन्न वर्गों तक उच्च शिक्षा का लाभ पहुँचाने के अपने प्रयास में सदैव सफल रहे। जनजातीय लोगों को अन्य क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तरह शिक्षित करने की दिशा में इस विश्वविद्यालय का प्रयास सराहनीय रहा है। आपके alumni देश के कई संस्थानों में प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं एवं राष्ट्र की सेवा में पूरी कर्त्तव्यनिष्ठा से अपना योगदान दे रहे हैं। आप सभी अपने सीनियर्स से प्रेरणा लें एवं अपने–आपको आगे की नई यात्रा के लिए तैयार करें।

**17.** अब समय आ गया है जब हमें खुद को तैयार करके भारत की उसी गौरव गाथा को फिर से प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। मैं सभी छात्रों को पुनः बधाई देती हूँ और आप सभी की सफलता की कामना करती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि आप सब समाज में अपना भरपूर योगदान देंगे और उस संस्थान, जहां आपने शिक्षा पाई तथा राष्ट्र के नाम को रौशन करेंगे। आप सब अपने अपने क्षेत्रों में तरक्की करें, साथ में समाज; राष्ट्र के प्रति भी आपका चिन्तन हो, यह उम्मीद करती हूं, आप की आशायें उच्च हों; आपके संकल्प शुभ हो, ऐसी आशा व शुभेच्छा करती हूं। इसके साथ ही मैं स्नातक की उपाधि प्राप्त कर रहे सभी छात्रों के सफल जीवन की कामना करती हूँ।

धन्यवाद।